असगर वजाहत

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» असगर वजाहत: परिचय और साहित्यिक योगदान

प्रश्न 1 (आसान). असगर वजाहत का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). उन्होंने किस विश्वविद्यालय से पढ़ाई की थी?
उत्तर – अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

प्रश्न 3 (मध्यम). असगर वजाहत द्वारा लिखी गई किन्हीं दो विधाओं के नाम बताओ।
उत्तर – कहानी और नाटक (या उपन्यास, पटकथा, लघुकथा)

प्रश्न 4 (कठिन). असगर वजाहत ने सिर्फ किताबों के लिए ही नहीं, और किसके लिए लेखन कार्य किया है?
उत्तर – उन्होंने फिल्मों और धारावाहिकों के लिए भी पटकथा लेखन का काम किया है।

» असगर वजाहत की भाषा शैली

प्रश्न 5 (आसान). असगर वजाहत की भाषा में कौन सी दो मुख्य विशेषताएँ हैं?
उत्तर – गांभीर्य और सशक्त भावाभिव्यक्ति।

प्रश्न 6 (आसान). उनकी भाषा में सहजता और सादगी लाने में किन चीज़ों का योगदान है?
उत्तर – मुहावरों और तद्भव शब्दों का प्रयोग।

प्रश्न 7 (मध्यम). व्यंग्यात्मकता से आप क्या समझते हैं? असगर वजाहत इसका प्रयोग क्यों करते हैं?
उत्तर – व्यंग्यात्मकता यानी बात को मज़ाकिया या कटाक्ष भरे अंदाज़ में कहना, जिससे किसी सामाजिक बुराई या विसंगति पर चोट की जा सके। असगर वजाहत इसका प्रयोग समाज की कमियों को प्रभावी ढंग से उजागर करने के लिए करते हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). असगर वजाहत की भाषा शैली भारतीय समाज के किन पहलुओं को सामने लाती है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – उनकी भाषा शैली भारतीय समाज की कुरीतियों, सत्ता के पाखंड, जनता की भोली-भाली उम्मीदों और शोषण की सच्चाई को सामने लाती है। उदाहरण के लिए, 'शेर' कहानी में सत्ता का लालच देकर लोगों को गुमराह करना या 'पहचान' में राजा का ऐसी प्रजा पसंद करना जो चुपचाप आदेश माने, ये सब समाज की कड़वी सच्चाइयों को ही दर्शाते हैं।

» लघुकथा 'शेर': व्यवस्था का प्रतीक और विरोध

प्रश्न 9 (आसान). लघुकथा 'शेर' में 'शेर' किसे दर्शाता है?
उत्तर – सत्ता व्यवस्था को।

प्रश्न 10 (आसान). शेर के पेट में जानवर क्यों समाते जा रहे थे?
उत्तर – किसी न किसी प्रलोभन या लालच के चलते।

प्रश्न 11 (मध्यम). 'शेर' लघुकथा किस प्रकार की रचना है?
उत्तर – यह एक प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघुकथा है।

प्रश्न 12 (कठिन). लेखक के अनुसार सत्ता कब तक खामोश रहती है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – लेखक के अनुसार, सत्ता तब तक खामोश रहती है जब तक सब उसकी आज्ञा का पालन करते रहें। जैसे ही कोई उसकी व्यवस्था पर उँगली उठाता है या उसकी आज्ञा मानने से इनकार करता है, वह खूँखार हो उठती है और विरोध में उठे स्वर को कुचलने का प्रयास करती है।

» लघुकथा 'पहचान': सत्ता और अंधी, गूंगी, बहरी प्रजा

प्रश्न 13 (आसान). कहानी में राजा को कैसी प्रजा पसंद थी?
उत्तर – अंधी, गूंगी और बहरी।

प्रश्न 14 (आसान). राजा के लिए 'अंधी' प्रजा होने का क्या मतलब है?
उत्तर – मतलब, जो राजा की गलतियों को न देखे।

प्रश्न 15 (मध्यम). लेखक ने 'पहचान' लघुकथा में किस यथार्थ की पहचान कराई है?
उत्तर – लेखक ने इस यथार्थ की पहचान कराई है कि सत्ता को ऐसी प्रजा पसंद आती है जो बिना बोले, सुने या देखे उसकी हर आज्ञा का पालन करे। यह दिखाता है कि कैसे सत्ता जनता की आवाज़ को दबाकर अपनी शक्ति बनाए रखना चाहती है।

प्रश्न 16 (कठिन). 'भूमंडलीकरण और उदारीकरण वेफ दौर में इन्हें प्रगति और उत्पादन से जोड़कर संगत और शरूरी भी ठहराया जा रहा है।' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – इस पंक्ति का आशय यह है कि आज के वैश्वीकरण और खुले बाज़ार के युग में, जब देशों में आर्थिक सुधार हो रहे हैं, तब सत्ता जनता की अंधी, गूंगी और बहरी स्थिति को 'प्रगति' और 'अधिक उत्पादन' के नाम पर सही ठहराती है। राजा जनता को यह विश्वास दिलाता है कि चुपचाप काम करते रहने से ही देश का विकास होगा और उनका जीवन बेहतर होगा, जबकि असल में वह सिर्फ अपने स्वार्थ और नियंत्रण को मजबूत कर रहा होता है।

» लघुकथा 'चार हाथ': पूँजीवादी शोषण और मजदूर

प्रश्न 17 (आसान). 'चार हाथ' लघुकथा किस समस्या पर केंद्रित है?
उत्तर – यह लघुकथा पूँजीवादी व्यवस्था में मज़दूरों के शोषण की समस्या पर केंद्रित है।

प्रश्न 18 (आसान). मालिक मज़दूरों के साथ कैसा व्यवहार करता है?
उत्तर – मालिक मज़दूरों को सिर्फ़ काम निकालने वाली मशीन समझता है और उनका अमानवीय शोषण करता है।

प्रश्न 19 (मध्यम). कहानी में 'चार हाथ' का क्या प्रतीकात्मक अर्थ है?
उत्तर – 'चार हाथ' का प्रतीकात्मक अर्थ है कि मालिक मज़दूरों से दुगना या उससे भी ज़्यादा काम कम पैसे में लेना चाहता है, और उन्हें सिर्फ़ काम करने वाला उपकरण मानता है, इंसान नहीं।

प्रश्न 20 (कठिन). 'पूँजीवादी शोषण' शब्द को 'चार हाथ' लघुकथा के संदर्भ में समझाइए।
उत्तर – पूँजीवादी शोषण का अर्थ है कि जिन लोगों के पास ज़्यादा पैसा और साधन (पूँजी) होते हैं, वे अपने फ़ायदे के लिए मज़दूरों की मेहनत का अनुचित लाभ उठाते हैं। 'चार हाथ' में फैक्टरी मालिक मज़दूरों को शारीरिक रूप से कमज़ोर करके, ज़्यादा काम लेकर और कम मज़दूरी देकर उनका शोषण करता है, ताकि उसका ज़्यादा मुनाफ़ा हो सके। यह मज़दूरों की इंसानियत और सम्मान को छीन लेता है।

» लघुकथा 'साझा': किसानों की बदहाली और शोषण

प्रश्न 21 (आसान). 'साझा' लघुकथा में किसकी बदहाली का वर्णन किया गया है?
उत्तर – किसानों की बदहाली का।

प्रश्न 22 (आसान). पूंजीपतियों की नजर किस पर गड़ी रहती है?
उत्तर – किसानों की ज़मीन और फसल पर।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'साझा' खेती का झाँसा कौन देता है और क्यों?
उत्तर – गाँव का प्रभुत्वशाली वर्ग पूंजीपतियों के साथ मिलकर किसानों को झाँसा देता है ताकि उनकी फसल को हड़प कर शोषण कर सकें।

प्रश्न 24 (कठिन). 'हाथी के पेट में जाना' मुहावरे का क्या अर्थ है और यह किसानों के संदर्भ में क्या दर्शाता है?
उत्तर – 'हाथी के पेट में जाना' का अर्थ है किसी चीज़ का पूरी तरह से नष्ट हो जाना या बहुत बड़े हिस्से का किसी और द्वारा खा लिया जाना। किसानों के संदर्भ में, यह दर्शाता है कि उनकी सारी मेहनत और कमाई अमीर तथा ताकतवर लोगों द्वारा हड़प ली जाती है, और उन्हें कुछ नहीं मिलता।

» लघुकथा 'शेर' का विस्तृत पाठ: जानवरों के प्रलोभन

प्रश्न 25 (आसान). शेर का मुँह खुला देखकर लेखक की पहली प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर – लेखक डर के मारे एक झाड़ी के पीछे छिप गया।

प्रश्न 26 (आसान). लोमड़ी किस बहाने शेर के मुँह में जाने को तैयार हुई?
उत्तर – रोज़गार पाने के बहाने।

प्रश्न 27 (मध्यम). उल्लू के लिए शेर का मुँह किस चीज़ का प्रतीक था, और क्यों?
उत्तर – उल्लू के लिए शेर का मुँह स्वर्ग का प्रतीक था क्योंकि उसे बताया गया था कि वही निर्वाण (मोक्ष) का एकमात्र रास्ता है।

प्रश्न 28 (कठिन). कुत्तों का जुलूस हँसते-गाते हुए और कभी चीखते-चिल्लाते हुए क्यों शेर के मुँह में जा रहा था? इसका क्या अर्थ है?
उत्तर – कुत्तों का जुलूस हँसते-गाते और कभी विरोध में चीखते-चिल्लाते हुए जा रहा था। यह उन लोगों का प्रतीक है जो ऊपरी तौर पर विरोध का नाटक करते हैं, अपनी समस्याओं के बारे में ज़ोर-ज़ोर से बोलते तो हैं, पर अंदर से वे भी दुम दबाकर (यानी मजबूर होकर या चुपचाप) उसी शोषणकारी व्यवस्था का हिस्सा बन जाते हैं। उनकी बड़ी-बड़ी लाल जीभें निकली हुई थीं, जो उनके अंदर के लालच या असंतोष को दिखाती हैं, पर अंत में वे भी विरोध के बावजूद शेर के मुँह में ही चले जाते हैं। यह दिखाता है कि कैसे विरोध को भी 'सिस्टम' का हिस्सा बना लिया जाता है या फिर विरोध सिर्फ़ दिखावा बनकर रह जाता है।

» लघुकथा 'शेर' का निष्कर्ष: अहिंसा और सह-अस्तित्व का ढोंग

प्रश्न 29 (आसान). लघुकथा 'शेर' में शेर कौन से दो आदर्शों की बात करता है?
उत्तर – अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद।

प्रश्न 30 (आसान). शेर के पेट को किसका दफ़्तर बताया गया है?
उत्तर – रोज़गार का दफ़्तर।

प्रश्न 31 (मध्यम). लेखक ने शेर के 'अहिंसावादी' होने पर क्यों संदेह किया?
उत्तर – क्योंकि शेर स्वभाव से एक शिकारी है और उसका ऐसा कहना उसकी असलियत से मेल नहीं खाता था। लेखक को लगा कि यह सिर्फ एक दिखावा है।

प्रश्न 32 (कठिन). इस लघुकथा के माध्यम से लेखक सत्ता में बैठे लोगों की किस मानसिकता पर कटाक्ष करते हैं?
उत्तर – लेखक यह दिखाना चाहते हैं कि सत्ता में बैठे लोग अक्सर अपनी क्रूरता, शोषण और स्वार्थ को छिपाने के लिए 'अहिंसा', 'शांति', 'विकास' जैसे आदर्शवादी शब्दों का मुखौटा पहन लेते हैं। वे मीठी-मीठी बातें करके लोगों को भ्रमित करते हैं और अपना एजेंडा चलाते रहते हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. असगर वजाहत के साहित्यिक योगदानों की मुख्य बातें क्या हैं?

› पहला कदम, उनके जन्मस्थान और शिक्षा को समझना: उनका जन्म फतेहपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ और उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पढ़ाई की।

› दूसरा कदम, उनकी लेखन यात्रा की शुरुआत: उन्होंने 1955-56 से लेखन शुरू कर दिया था और पहले पत्र-पत्रिकाओं में लिखा।

› तीसरा कदम, उनकी लेखन की विधाएँ: उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक (जैसे 'जिस लाहौर नई देख्या'), लघुकथा, और फिल्मों-धारावाहिकों के लिए पटकथाएँ भी लिखीं।

› चौथा कदम, उनके साहित्य का मुख्य विषय: उनके लेखन में आम आदमी की ज़िंदगी, सामाजिक मुद्दे और व्यवस्था पर व्यंग्य मुख्य रूप से दिखते हैं।

उत्तर – असगर वजाहत ने कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा और पटकथा लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसमें समाज की सच्चाइयों और आम जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है।

उदाहरण 2. असगर वजाहत की 'शेर' कहानी में व्यंग्य कैसे झलकता है?

› सबसे पहले हमें देखना होगा कि कहानी में 'शेर' किसका प्रतीक है। यहाँ शेर सत्ता का प्रतीक है, जो ऊपर से न्यायप्रिय दिखता है लेकिन अंदर से खूँखार है।

› फिर, हमें समझना होगा कि जानवर क्यों शेर के मुँह में जाते हैं। वे हरी घास, नौकरी, या स्वर्ग के लालच में जाते हैं, जो जनता को दिए जाने वाले झूठे वादे हैं।

› अब देखो, लेखक इन वादों और शेर के असलियत को साथ रखकर दिखाता है। यही तो व्यंग्य है! बाहर से अहिंसक दिखने वाला शेर असल में स्वार्थी और अत्याचारी है।

› यानी, वह लोगों को उनके फायदे का लालच देकर अपना गुलाम बनाता है। यह असल सत्ता की आलोचना है, जिसे मज़ाकिया और प्रतीकात्मक तरीके से पेश किया गया है।

उत्तर – असगर वजाहत की 'शेर' कहानी में, शेर सत्ता का प्रतीक है जो झूठे वादे (हरी घास, नौकरी, स्वर्ग) देकर जनता को अपने अधीन करता है। यह सत्ता की पाखंडी और शोषक प्रवृत्ति पर गहरा व्यंग्य है।

उदाहरण 3. लघुकथा 'शेर' में शेर किसका प्रतीक है और यह कैसे दिखाया गया है?

› पहला कदम: हमें समझना है कि असगर वजाहत की यह लघुकथा एक प्रतीकात्मक कहानी है, यानी इसमें जो दिख रहा है, उसका एक गहरा, छिपा हुआ अर्थ है।

› दूसरा कदम: कहानी में 'शेर' को जंगल का सबसे शक्तिशाली प्राणी दिखाया गया है, जिसके सामने बाकी जानवर चुपचाप झुकते जाते हैं।

› तीसरा कदम: यह शक्ति और नियंत्रण ही समाज में 'सत्ता' या 'व्यवस्था' की पहचान है। जैसे शेर अपने फायदे के लिए जानवरों को अपने पास बुलाता है, वैसे ही सत्ता भी लोगों को प्रलोभन देती है।

› चौथा कदम: जब लेखक (जो कहानी में आम आदमी का प्रतीक है) शेर के मुँह में जाने से मना करता है, तो शेर अचानक दहाड़ता है और अपनी खूंखार असलियत दिखाता है। यह दर्शाता है कि जब कोई व्यवस्था का विरोध करता है, तो सत्ता अपना क्रूर रूप दिखाती है।

› तो, हम कह सकते हैं कि 'शेर' सत्ता व्यवस्था का प्रतीक है, जो ऊपर से भले ही शांत दिखे, लेकिन विरोध करने पर अपनी खूंखार प्रकृति दिखाती है।

उत्तर – लघुकथा 'शेर' में शेर 'सत्ता व्यवस्था' का प्रतीक है, जो अपनी शक्ति और नियंत्रण से दूसरों को आकर्षित या मजबूर करती है, और विरोध करने पर अपना खूंखार व क्रूर रूप दिखाती है।

उदाहरण 4. लघुकथा 'पहचान' में राजा की पसंद कैसी प्रजा थी और क्यों?

› सबसे पहले, यह पहचानो कि कहानी का केंद्रीय पात्र राजा क्या चाहता है। राजा 'अंधी, गूंगी और बहरी' प्रजा चाहता था।

› अब, इसका प्रतीकात्मक अर्थ समझो। 'अंधी' का मतलब है कि प्रजा राजा की गलतियों और शोषण को न देखे। 'गूंगी' का मतलब है कि प्रजा राजा के खिलाफ आवाज़ न उठाए। 'बहरी' का मतलब है कि प्रजा दूसरों की बातों को या सच्चाई को न सुने।

› अंत में, इस पसंद के पीछे राजा का उद्देश्य बताओ। राजा ऐसा इसलिए चाहता था ताकि वह अपनी सत्ता और पकड़ को मज़बूत कर सके, उत्पादन के सभी साधनों पर नियंत्रण रख सके, और जनता को एकजुट होकर विरोध करने से रोक

सके। उसे अपनी निरंकुशता बनाए रखनी थी।

उत्तर – लघुकथा 'पहचान' में राजा को ऐसी प्रजा पसंद थी जो अंधी, गूंगी और बहरी हो। इसका अर्थ है कि वह ऐसी प्रजा चाहता था जो उसकी गलत नीतियों और शोषण को अनदेखा करे, उसके खिलाफ आवाज़ न उठाए, और किसी भी सच्चाई या विरोध को न सुने। ऐसा करके राजा अपनी सत्ता को मज़बूत करना चाहता था, सभी संसाधनों पर अपना अधिकार जमाना चाहता था और जनता को एकजुट होने से रोकना चाहता था ताकि उसकी मनमानी चलती रहे।

उदाहरण 5. 'चार हाथ' लघुकथा में मज़दूरों की कौन-कौन सी परेशानियाँ दिखाई गई हैं?

› पहला कदम, कहानी में दिखाया गया है कि मालिक मज़दूरों को दो की जगह चार हाथ लगाने की कोशिश करता है। इसका मतलब है कि वह मज़दूरों से दुगना काम कराना चाहता है, कम पैसों में।

› दूसरा कदम, जब मालिक मज़दूरों को काटकर उनके हाथ लगवाता है, तो यह दर्शाता है कि मज़दूरों का शारीरिक और मानसिक शोषण किया जा रहा है। उनकी जान का भी खतरा है।

› तीसरा कदम, मज़दूरों को आधा वेतन मिलता है और वे इतनी लाचारी में हैं कि विरोध भी नहीं कर पाते। यह उनकी बेबसी और अस्मिता के हनन को दिखाता है।

› चौथा कदम, अंत में मज़दूर सिर्फ 'मिल के कल-पुर्ज़े' बनकर रह जाते हैं, अपनी पहचान खो देते हैं। वे केवल मशीन का हिस्सा हैं, इंसान नहीं।

उत्तर – 'चार हाथ' लघुकथा में मज़दूरों का शारीरिक और मानसिक शोषण, उनकी लाचारी, कम वेतन पर काम करने की मजबूरी, और उनकी व्यक्तिगत पहचान का हनन जैसी प्रमुख परेशानियाँ दिखाई गई हैं।

उदाहरण 6. 'साझा' लघुकथा में 'हाथी' किसका प्रतीक है और यह किस तरह किसानों का शोषण करता है?

› सबसे पहले पहचानो कि लघुकथा में 'हाथी' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है।

› कहानी के अनुसार, 'हाथी' समाज के 'धनाढ्य और प्रभुत्वशाली वर्ग' का प्रतीक है।

› यह वर्ग किसानों को 'साझा खेती' का झाँसा देता है।

› किसान की मेहनत से उगी सारी फसल को धोखे से हड़प लेता है।

› इस तरह, 'हाथी' (धनाढ्य वर्ग) किसानों की सारी कमाई को निगल जाता है, जैसे हाथी बहुत सारा भोजन खा जाता है, और किसान को उसकी मेहनत का फल नहीं मिल पाता।

उत्तर – 'साझा' लघुकथा में 'हाथी' समाज के अमीर और ताकतवर वर्ग का प्रतीक है। यह वर्ग किसानों को साझा खेती के नाम पर धोखा देता है और उनकी सारी मेहनत की कमाई (फसल) को हड़प कर उनका शोषण करता है, जिससे किसान बदहाल हो जाते हैं।

उदाहरण 7. लघुकथा 'शेर' में गधा, लोमड़ी और उल्लू किस-किस प्रलोभन में आकर शेर के मुँह में प्रवेश करते हैं? समझाइए।

› सबसे पहले कहानी को ध्यान से पढ़ें और हर जानवर के डायलॉग को समझें।

› गधे के हिस्से में आए संवाद को देखें। वह कहता है, 'वहाँ हरी घास का एक बहुत बड़ा मैदान है।' इसका मतलब, गधा हरी घास के लालच में गया।

› लोमड़ी के संवाद पर ध्यान दें। वह कहती है, 'शेर वेफ मुँह वेफ अंदर रोशगार का दफ़्तर है। मैं वहाँ दरख्वास्त दूँगी, पिफर मुझे नौकरी मिल जाएगी।' तो लोमड़ी रोज़गार के प्रलोभन में गई।

› अब उल्लू का संवाद पढ़ें। वह कहता है, 'शेर वेफ मुँह वेफ अंदर स्वर्ग है।' तो उल्लू स्वर्ग के लालच में चला गया।

› इन तीनों प्रलोभनों को एक साथ समझाइए कि कैसे शेर (जो सत्ता का प्रतीक है) अलग-अलग कमज़ोरियों का फ़ायदा उठाता है।

उत्तर – लघुकथा 'शेर' में, गधा हरी घास के प्रलोभन में, लोमड़ी रोज़गार के प्रलोभन में, और उल्लू स्वर्ग के प्रलोभन में आकर शेर के मुँह में प्रवेश करते हैं। यह दर्शाता है कि कैसे सत्ताधारी (शेर) लोगों की मूलभूत ज़रूरतों, इच्छाओं और आस्थाओं का लाभ उठाकर उन्हें अपने जाल में फँसाता है।

उदाहरण 8. लघुकथा 'शेर' में, शेर खुद को 'अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद' का समर्थक क्यों बताता है?

› पहले यह समझो कि शेर का स्वभाव क्या है? वह एक शिकारी जानवर है, जो दूसरे जानवरों को मारकर खाता है।

› कहानी के अनुसार, लोग शेर के पास क्यों जाते थे? क्योंकि सुना था कि उसके पेट में 'रोज़गार का दफ़्तर' है, यानी वहाँ लोगों को कुछ मिल रहा है।

› शेर खुद को 'अहिंसावादी' और 'सह-अस्तित्ववादी' कहकर अपनी असलियत को छिपा रहा है।

› यह एक चाल है ताकि जंगली जानवर उससे डरें नहीं और उसके पास आते रहें, जिससे उसका 'पेट' भरता रहे, चाहे वो किसी भी रूप में हो (शारीरिक या प्रतीकात्मक)।

› तो निष्कर्ष यह निकलता है कि वह अपनी क्रूरता और शोषण को अच्छे शब्दों के मुखौटे से ढँक रहा है।

उत्तर – शेर खुद को 'अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद' का समर्थक इसलिए बताता है ताकि वह अपनी हिंसक और शोषणकारी असलियत को छिपा सके। यह एक ढोंग है जिससे वह दूसरे जानवरों को अपने करीब ला सके और उनके माध्यम से अपना स्वार्थ पूरा कर सके।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में असगर वजाहत जी की प्रमुख रचनाओं और उनके साहित्यिक योगदानों पर सीधा प्रश्न आ सकता है, इसलिए उनके नाटकों और कहानी संग्रह के नाम ज़रूर याद कर लेना।

• यह प्रतीकात्मक कहानी है, इसलिए बोर्ड परीक्षा में शेर, जानवर और लेखक के प्रतीकात्मक अर्थ को स्पष्ट करना बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह लघुकथा सत्ता की प्रकृति पर एक गहरा व्यंग्य है। परीक्षा में इसके प्रतीकात्मक अर्थ (अंधी, गूंगी, बहरी प्रजा) और भूमंडलीकरण के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता को ज़रूर स्पष्ट करें।

• यह लघुकथा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें से अक्सर 'पूँजीवादी शोषण' या 'मज़दूरों की लाचारी' से संबंधित प्रश्न आते हैं। कहानी के मुख्य बिंदुओं और प्रतीकात्मक अर्थ को ध्यान से समझना।

एक नज़र में रिवीज़न

› असगर वजाहत: फतेहपुर में जन्मे, कहानी, नाटक, उपन्यास, पटकथा के लेखक।

› 'शेर' = सत्ता व्यवस्था का प्रतीक; विरोध पर खूँखार रूप

› राजा को अंधी, गूंगी, बहरी प्रजा पसंद – सत्ता का शोषण, विकास का मुखौटा।

› 'चार हाथ' लघुकथा: पूँजीवादी शोषण, मज़दूरों की अस्मिता हनन, लाचारी।